ओ३म्

सुधारक

गुरुकुल झज्जर का लोकप्रिय मासिक पत्र

वर्ष 68 अंक 5 जनवरी 2021 पौष 2077 वार्षिक मूल्य 150 रु०

सुभाषचन्द्र बोस

जन्म - 23.01.1897 ई०

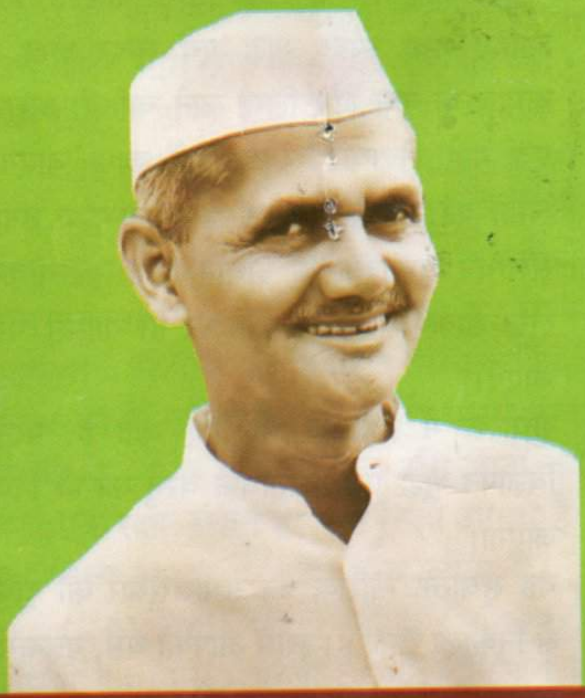

लालबहादुर शास्त्री

निधन - 11.01.1966 ई०

संस्थापक : स्व० स्वामी ओ३मानन्द सरस्वती
प्रधान सम्पादक : आचार्य विजयपाल
सम्पादक : विरजानन्द दैवकरणि
व्यवस्थापक : ब्र० साहिल आर्य

सुधारक के नियम व सविनय निवेदन

1. सुधारक का वार्षिक शुल्क 150 रुपये है तथा आजीवन सदस्यता शुल्क 1500 रुपये है।
2. यदि सुधारक 20 तारीख तक नहीं पहुंचता है तो आप व्यवस्थापक सुधारक के नाम से पत्र डालें। पत्र मिलते ही सुधारक पुनः भेज दिया जाएगा।
3. वार्षिक शुल्क तथा आजीवन शुल्क मनीआर्डर द्वारा **'व्यवस्थापक सुधारक'** के नाम भेजें। सुधारक वी.पी. रजिस्ट्री द्वारा नहीं भेजा जाएगा।
4. लेख सम्पादक सुधारक के नाम भेजें, लेख छोटे, सरल, संक्षिप्त, सारगर्भित तथा मौलिक होने चाहिएं तथा स्पष्ट, शुद्ध एवं सुन्दर लेख में कागज के एक ओर लिखे जाने चाहिएं। अशुद्ध एवं गन्दे लेखवाला लेख नहीं छापा जाएगा। लेखों को प्रकाशित करना न करना तथा उनमें संशोधन सम्पादक के अधीन होगा। अस्वीकृत लेख डाक-व्यय प्राप्त होने पर ही वापिस भेजे जाएंगे।
5. सुधारक में विज्ञापन भी दिए जाते हैं, परन्तु विज्ञापन शुद्ध एवं वास्तविक वस्तु का ही दिया जाएगा।
6. यह सुधारक मासिक पत्र समाजसुधार की दृष्टि से निकाला जाता है। इसमें आपको धर्म, यज्ञकर्म, समाजसुधार, देश व समाज की स्थिति, ब्रह्मचर्य, योगासन आदि विषयों पर लेख पढ़ने को मिलेंगे।
7. सुधारक के दस ग्राहक बनानेवाले सज्जन को एक वर्ष तक निःशुल्क सुधारक भेजा जाएगा तथा पचास ग्राहक बनानेवाले सज्जन को दो वर्ष निःशुल्क सुधारक भेजा जाएगा तथा उसका फोटो सहित जीवन परिचय सुधारक में निकाला जाएगा।

–व्यवस्थापक

वर्ष :68 अंक : 5
जनवरी 2021 विक्रमाब्द 2077
दयानन्दाब्द 196 कलिसंवत् 5121
सृष्टिसंवत्-1, 96, 08, 53, 121

विषय-सूची

क्र.सं.	विषय	पृष्ठ
1.	वैदिक विनय	1
2.	सम्पादकीय	2
3.	उठें! जागें!! हिन्दू...	4
4.	श्री लाल बहादुर शास्त्री...	7
5.	नेता जी सुभाषचन्द्र बोस...	12
6.	आचार्य भगवान्देव...	13
7.	मां की पुकार	18
8.	सदा उत्साहित...	22
9.	गुरुकुल झज्जर की...	23
10.	धनुर्वेद पुस्तक की समीक्षा	24

नोट :- लेखक अपने लेख का स्वयं जिम्मेवार होगा।

सुधारक मासिक पत्र का वार्षिक शुल्क १५० रुपये भेजकर स्वयं ग्राहक बनें और दूसरे साथियों को भी ग्राहक बनाकर सुधार कार्य में सहयोग दीजिये।

-व्यवस्थापक सुधारक

वैदिक विनय

इयं वेदिःपरो अन्तःपृथिव्याः,
अयं यज्ञो विश्वस्य भुवनस्य नाभिः
अयं सोमो वृष्णो अश्वस्य रेतः
ब्रह्मायं वाचः परमं व्योम।।

ऋ० १, १६४, ३५।। यजु०२३, ६२।।अथर्व.९,१०,१४।।

विनय

क्या तुम पूछते हो कि इस अतिविस्तीर्यमाण पृथ्वी का परला सिरा किस जगह है, अन्तिम सीम कहां है? अरे, जहां तुम खड़े हो यह वेदि, यह यज्ञवेदि ही इस पृथ्वी की समाप्ति सीमा है। प्रत्येक मनुष्य की अपनी यज्ञवेदि ही उसके लिये इस गोलाकार पृथ्वी की अन्तिम सीमा है। यज्ञ के रहस्य के जानने वाले जानते हैं कि यह सम्पूर्ण ही पृथ्वी वेदिरूप है और अध्यात्म यज्ञ के लिये हम स्वयं, हमारा यह शरीर ही वेदिरूप है। इस घूमनेवाले संसार चक्र की, इस संसार के संसरण की सीमा भी हमारी यह शरीर रूपी वेदि ही है। इस संसार सागर के परले किनारे पहुंचने के लिये हमें और कहीं जाने की जरूरत नहीं है, यह 'परो अन्तः हमारे अन्दर 'उरः' (हृदय) रूपी यज्ञवेदि पर ही है। जब मनुष्य को इस असली यज्ञवेदि का पता लग जाता है तभी वह भवसागर के परले पार पहुँच जाता है। तुम इस सम्पूर्ण भुवन के नाभिस्थान को पूछते हो? देखो, यह यज्ञ ही वह केन्द्रीय वस्तु है जिससे कि यह सब ब्रह्माण्ड, इस ब्रह्माण्ड के सब संसार, संसारों की सब वस्तुएं, परस्पर बंधी हुई हैं। यज्ञ रूप से ही परमेश्वर इस सब संसार को यथावत् जोड़े हुये है। यज्ञ न रहे तो सब संसार बिखर जाये, सब वस्तुएं जुदा-जुदा होकर नष्ट हो जावें। यज्ञ ही वह वस्तु है जो सबका संगतिकरण करने वाली, सब को ठीक तरह बांध रखने वाली, सर्वस्व सब की नाभि है।

क्या तुम पूछते ही इस आदित्य रूपी महावीर्यशाली 'अश्व' का वीर्य क्या है? तो देखो, यह वीर्य सोम है। सोमलतादि वनस्पति के रस के हवन से आदित्य द्वारा सब संसार में सब प्रकार की समृद्धि उत्पन्न होती है, वृष्टि रूप सोमरस के सेचन से सब अन्न और अन्नाश्रित समस्त संसार उत्पन्न होता है। यह सभी संसार उस वृषा 'आदित्य' पुरुष द्वारा प्रकृति की योग्यता रूपी सोम से या जीवों में रहने वाले भोग प्राप्त करने के रस (इच्छा) रूपी सोम से उत्पन्न हुवा है और होता रहता है।

और तुम पूछते हो कि सब वाणियों का परम व्योम कौन है? यह ब्रह्मा, चारों वेदों का ज्ञाता ब्रह्मज्ञ ब्रह्मा या चारों प्रकार के सम्पूर्ण ज्ञान का आश्रय स्वयं परब्रह्म ब्रह्मा वह परम आकाश है जहां से संसार भर की सब वाणियां निकलती हैं और लीन होती हैं। हमारे सब शास्त्रों का, सब वाणियों का, सब ज्ञानों का यही एक रक्षा-स्थान है, यही नित्य आधार है, यह नित्य आधार है, यही परम व्योम है।

(इयं) यह (वेदिः)यज्ञवेदि (पृथिव्याः) पृथिवी का (परः) परला (अन्तः) किनारा है (अयं) यह (यज्ञः) यज्ञ (विश्वस्य) सम्पूर्ण (भुवनस्य) ब्रह्माण्ड का (नाभिः) बांधने वाला नाभिस्थान है। (अयं)यह (सोमः) (वृष्णः) महावीर्यशाली (अश्वस्य) व्यापक आदित्य का (रेतः) वीर्य उत्पादक बीज है और (अयं) यह (ब्रह्मा) चारों वेदों का ज्ञाता (वाचः) वाणी का (परमं) परम (व्योम) आश्रय स्थान है।

सम्पादकीय

महर्षि दयानन्द जी की तीन मान्यताओं की आर्यसमाज द्वारा अनदेखी

महर्षि दयानन्द सरस्वती अपने पूरे जीवनकाल में सत्य का अन्वेषण करते रहे, जिसे पूर्णतः सत्य जाना, उसे तुरन्त ग्रहण कर लिया और असत्य तथा भ्रान्तधारणा को तुरन्त त्याग दिया।

प्रथम मान्यताः-सृष्टि उत्पत्ति, प्रथम मानवोत्पत्ति तथा वेद आविर्भाव का जो समय महर्षि जी ने ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका और सत्यार्थप्रकाश आदि ग्रन्थों में लिखा है अर्थात् वर्तमान में वह समग्र १९६०८५३१२१ वर्ष है अर्थात् उक्त तीनों इतने वर्ष पूर्व उत्पन्न हुए थे। ईसाई आदि लोग वेदोत्पत्ति को २९०० से ३१०० वर्ष पुराना मानते हैं, उनका सप्रमाण खण्डन करके ऋषिवर ने सही कालमान की स्थापना की है। इतना होने पर भी आर्यसमाज के कुछ विद्वान् महर्षि जी द्वारा गणित से सिद्ध किये कालमान को स्वीकार न करके १९७२९४९१२१ वर्ष मानते हैं। इसमें उनका हेतु यह है कि सभी मन्वन्तरों के मध्य सन्धिकाल का समय जोड़ना रह गया। इसमें विचारणीनय यह है कि जब दिन-रात की दोनों सन्धियां जोड़कर २४ घण्टे का एक दिन-रात मान लिया गया, इसमें अलग से सन्धिकाल दुबारा जोड़ने की क्या आवश्यकता है। इसी भांति दिन-रात मास-वर्ष की गणना लगातार करते जाने से सात मन्वन्तर लगातार व्यतीत होते रहे हैं। दो मन्वन्तरों के मध्य सतयुग जितनी १७२८००० वर्ष की सन्धि जोड़ने का कोई औचित्य नहीं है। और इस सन्धिवेला में मानवों और वेदों की क्या स्थिति रहती है यह भी स्पष्ट करना चाहिये।

द्वितीय मान्यताः-महर्षि दयानन्द जी ने मुम्बई में प्रथम आर्यसमाज की स्थापना विधिपूर्वक की थी। इसके लिये वे श्रीयुत् गोपालराव हरिदेशमुख आदि को ११ अप्रैल १८७५-चैत्र शुक्ला षष्ठी रविवार को पत्र लिखते हैं-.....आगे मुम्बई में चैत्र शुद्ध ५ शनिवार के दिन सन्ध्या के साढे पांच बजते आर्यसमाज का आनन्दपूर्वक आरम्भ हुआ। ईश्वरानुग्रह से अच्छा हुआ.....

इस प्रमाण के रहते हुए भी सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के आदेश से सर्वत्र ही चैत्र शुक्ला प्रतिपदा से आर्यसमाज का स्थापना दिवस मनाया जाता है, यह ऐतिहासिक भूल है। इसका परिमार्जन होना चाहिये। पं०युधिष्ठिर मीमांसक ने मुम्बई आर्यसमाज की प्राथमिक ११ मास की प्रकाशित कार्यवाही से भी यही सिद्ध किया है कि चैत्र शुक्ला पंचमी तिथि सही है। पं० लेखराम जी आर्य पथिक, बाबू देवेन्द्रनाथ, पं० इन्द्रविद्यावाचस्पति तथा डा० सत्यकेतु विद्यालंकार आदि प्रसिद्ध अन्वेषक और इतिहासकारों ने भी पंचमी तिथि स्वीकार की है। इन प्रमाणों के रहते हुए चैत्र शुक्ला प्रतिपदा को आर्यसमाज का स्थापना दिवस मनाने का हठ करना अशोभनीय है।

तृतीय मान्यता:- दैनिक सन्ध्या यज्ञ पद्धति ऋषि जी ने चार बार बदली है। जैसे-जैसे उचित पद्धति मिलती गई, इसमें सुधार करते गये। एक पद्धति तो परोपकारणी सभा अजमेर में मूलरूप से ही रक्खी है, वह प्रकाशित नहीं हुई। सारे आर्यजगत् में आजकल सन्ध्या तो पंचमहायज्ञविधि के अनुसार की जाती है, परन्तु यज्ञ उस ग्रन्थ से न लेकर संस्कारविधि के अनुसार किया जा रहा है। यह एक को ग्रहण करना, दूसरे को छोड़ देना किस बात को संकेतित कर रहा है, यह सोचें। पंचमहायज्ञ-विधि के अनुसार आर्यजगत् में वर्षों से सन्ध्या पद्धति अपनाई जा रही है। संस्कार विधि का दूसरा संस्करण ऋषि जी ने अन्तिम समय में प्रकाशित कराया था। उसके वेदारम्भ प्रकरण में ऋषि जी ने लिखा है कि गृहस्थाश्रम प्रकरण में लिखे सन्ध्या विधि को आचार्य बालक से करिवाये। वहीं यह बात दो बार लिखी है।

गृहस्थाश्रम प्रकरण में लिखते हैं-नीचे लिखे प्रमाणे सन्ध्या करें तथा इन मन्त्रों का अर्थ और प्रमाण पंचमहायज्ञविधि में देख लें। यहां विधि तो संस्कारविधि की मानी गई है, परन्तु सन्ध्या क्यों करनी चाहिये और उन मन्त्रों का अर्थ देखने के लिये पंचमहायज्ञविधि की सीमारेखा रख दी गई।

यदि सन्धाविधि पंचमहायज्ञविधि की ही मान्य होंती तो संस्कारविधि में दुबारा लिखने की क्या आवश्यकता थी।

सार्वदेशिक सभा की धर्मार्यसभा ने गम्भीरतापूर्वक विषय को न लेकर सन्ध्या पद्धति का आदेश जारी कर दिया। यदि सभा के विद्वान् संस्कार विधि के तीनों लेख देख्कर निर्णय करते तो यह सुधार पहले ही हो जाता। परन्तु अब तो इस विषय में धर्मार्यसभा ने सोचना ही छोड़ दिया है।

संस्कार विधि के अनुसार सन्ध्या पद्धति प्रचलित हो जाने पर पंचमहायज्ञविधि निरर्थक नहीं मानी जा सकती, उसका उपयोग करने के लिये ऋषि जी ने संकेत कर दिया है।

आशा है आर्यजगत् के विद्वान्, स्वाध्यायशील सज्जन तथा अन्वेषक महोदय उपर्युक्त तीनों विषयों का गम्भीरता से अध्ययन करके जनता को सच्चाई तक पहुंचाने की कृपा करेंगे। **-विरजानन्द दैवकरिण**

९४१६०५५७०२

आर्य वर चाहिए

एम.एस.सी. (केमेस्टरी), बी.एड., सी टेट, नेट (JRF) योग्यता प्राप्त आ.आई.टी. दिल्ली में पीएच.डी. कर रही तथा वर्तमान में ऑनलाइन टीचिंग संस्था byjus, उद्योग विहार गुरुग्राम में लर्निंग एंड डेवलपमैंट स्पेशलिस्ट (एल.एन.डी.स्पे.) के पद पर नियुक्त वेतन (50,000 मासिक) आर्य युवती हेतु समकक्ष योग्यता प्राप्त आर्य वर अभीष्ट है। राजकीय प्रवक्ता/प्राध्यापक/ एवं प्रथम/ द्वितीय श्रेणी के अधिकारी को वरीयता।

जन्म तिथि - 12-12-1993

कद 5 फुट 5 इंच

वर्जित गोत्र-श्योराण, डांगी और गहलोत

आर्य माता-पिता संपर्क करें-

संपर्क सूत्र- 9812685005 कुल जाट

उठें! जागें !! हिन्दू तथा विशेषकर जाट समुदाय

इतिहास से सीखें

-१. सुप्रसिद्ध कहावत है कि 'इतिहास अपने को दोहराता है।' जो देश, समाज, जाति, वर्ग इतिहास से पास-पड़ोस की घटानाओं से शिक्षा ग्रहण नहीं करता, सबक नहीं लेता, इतिहास अपने को दोहरा कर अच्छे-बुरे दोनों प्रकार के सुपरिणाम और दुष्परिणामों से सचेत करता है। ऐसे में जो समाज जाग गया वह बुरे परिणाम से बच गया और जो गफलत में सोया रहा, उसे और उसकी भावी पीढ़ियों को बुरा नतीजा भोगना ही पड़ेगा।

-२. हरियाणा का नूँह जिला, राजस्थान का पड़ोसी जिला अलवर, भरतपुर तक का क्षेत्र मेव बहुल होने से 'मेवात' कहलाता है। मेवों के पूर्वज हिन्दू थो। इस्लाम अपनाने के शताब्दियों बाद तक भी मेवसमाज ने कट्टरता को नहीं अपनाया। गोत्र प्रथा मानते रहे, हिन्दू त्यौहारों को मिल जुलकर मनाते रहे, आपसी भाईचारा बनाकर रखा। सुप्रसिद्ध इतिहास लेखक डॉक्टर के.सी.यादव ने १८५७ के स्वतंत्रता संग्राम में मेवों के योगदान पर अपनी पुस्तक में उन मेव शहीदों की विस्तृत सूची दी है जो अंग्रेज सरकार के जुल्मों के शिकार होकर फांसी पर लटका दिए गए। उन नामों में कितने ही मेव शहीदों के नाम हिन्दुओं जैसे ही हैं।

-३. अकबर बादशाह के दरबार में नवरत्नों में शामिल रहीम के पिता बैरमखान तथा अकबर के पिता हुमायूं की पत्नी मेवात के तत्कालीन शासक जमालखां की बेटियां थी, अर्थात् वे दोनों साढू थे। रहीम का जन्म बैरम खां की इसी पत्नी राजगोसाईं से हुआ था। यह एक हिन्दू नाम था। उस जमाने में भी मेव समाज कट्टर न था।

-४. कट्टरपंथी मुल्ला-मौलवियों को यह बात बहुत अखरी कि सैकड़ों वर्षों से इस्लाम अपना कर भी मेव कट्टर मुसलमान नहीं बन पाये हैं। उन्होंने देखा कि मेव अपने चाचा-ताऊ की बेटी से विवाह नहीं करते, गोत्र बचाकर शादी करते हैं, कइयों के नाम भी हिन्दुओं जैसे हैं, हिन्दुओं के त्यौहार मनाते हैं, उनसे भाईचारा रखते हैं, उनकी जैसी वेशभूषा रखते हैं। ये कैसे मुसलमान हैं? तबलीगी जमात के प्रचारकों ने गांव गांव जाकर मेवों को कट्टरता का ऐसा पाठ पढाया कि आज का मेव कट्टरता में अन्य मुसलमानों को पीछे छोड़ चुका है। स्मरण रहे, भारत विभाजन के समय महात्मा गांधी ने मेवात के ग्राम घासेड़ा में आकर इसी मेव समाज को पाकिस्तान जाने से रोका था।

-५.सुप्त और गफलत के पुराने रोग से पीड़ित हिन्दू समाज यदि जागरूक होता तो अपने बिछुड़े भाइयों को अपने में मिला सकता था, तब कि तबलीगी जमात ने यह कट्टरता का काम बहुत बाद में किया है। इससे पूर्व कई शताब्दियों तक आधे हिन्दू आधे से मुसलमान मेव समाज की ओर किसी हिन्दू संगठन ने सपने में भी इनको घर वापिस लाने की नहीं सोची। उल्टे यदि कोई सुबह का भूला सायंकाल

घर आना चाहे तो हिन्दू समाज ऐसा निर्दयी तथा आत्मघाती है कि उसके लिये घर का दरवाजा नहीं खोलता। वह यह भी नहीं सोचता कि 'मतान्तर करने से केवल एक हिन्दू ही कम नहीं होता अपितु हिन्दुओं का एक दुश्मन भी बढ़ जाता है।' -स्वामी विवेकानन्द

-६. किसी बुरे वक्त में जान बचाने के लिये, भय-डर के मारे, लोभ लालच से या देखा देखी क्षत्रिय स्वाभिमानी जाट समाज के कुछ गांव कहने भर को 'मूले जाट' बनने को मजबूर हुये थे। ये सब के सब हमारे बिछुड़े भाई हैं। हमारे ही समाजरूप शरीर के हाथ-पैर हैं। इम इन्हें शाबाशी देते हैं कि इन्होंने अपना कुछ भी नहीं बदला। ये कोई 'मूले' नहीं, विशुद्ध क्षत्रिय जाट हैं, इनकी रगों में वही खून बहता है, इनका हमारा खून का रिश्ता है। सबके नाम गोत्र तीज-त्यौहर, वेशभूषा सब कुछ वही का वही है जो अन्य जाटों के हैं।

-७. उपर्युक्त सब बातों से सीखकर अब हम आर्यसमाजी, हिन्दू संगठनों के नेता (राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ, राष्ट्रसेविका समिति, विश्व हिन्दू परिषद्, बजरंग दल आदि) तुच्छ पारस्परिक मतभेद भुला कर इस बृहत् उद्देश्य को पूरा करने में जुट जाएँ। बृहत् उद्देश्य की पूर्ति के लिये गौण उद्देश्य भुलाना ही श्रेयस्कर है। इसे किसी एक नाम पर न जोड़ें, समस्त हिन्दू गौरव से जोड़ें। इस कार्य के लिये यह अनुकूल समय है। जाट समाज के नेताओं की इसमें विशेष भूमिका तथा जिम्मेदारी होगी।

-८. बुरा वक्त बीत चुका कभी का, आज बहुत अच्छा वक्त है। समय केवल एक बार किसी व्यक्ति या समाज का दरवाजा खटखटाता है, जो सोया रहेगा उसका समय इन्तजार नहीं करता, वह दूसरे घर का देरवाजा खटखटायेगा, फिर समझ लें क्या होगा परिणाम। क्या हरियाणा में एक और मेवात?

-९. कैसे हो यह पवित्र कार्य, यह ईश्वरीय कार्य, यह ऐतिहासिक कार्य हमारी ओर से कुछ सुझाव हैं। समाज में अनेक गणमान्य सज्जन हैं जो और भी अच्छे सुझाव दे सकते हैं।

(क) ऐसे गांवों की सूची बनाएँ।

(ख) उन गांवों के सरपंच, नम्बरदार, पंच, बुजुर्ग, अध्यापक,सैनिक, पटवारी, अन्य सरकारी कर्मचारी, शिक्षित महिलाओं आदि की सूची बनाएँ।

(ग) उनके गोत्र लिखें।

(घ) उनकी रिश्तेदारियों वाले गांवों को भी सूची में शामिल करें।

(च) खाप नेता, विशेषकर उसी गोत्र के खाप नेता मूले भाइयों को निमन्त्रण देकर किसी एक सर्वमान्य स्थान, आर्यसमाज,गुरुकुल, मन्दिर-मठ, खाप के चबूतरे पर किसी शुभ अवसर पर (चौ० छोटूराम) जन्मदिवस, भरतपुर के जाट राजा सूरजमल के राज्य आरोहण दिवस या कोई भी अन्य जो उचित समझें एकत्र करें। जाटों के साधु, सन्त, पुरोहित, भरतपुर राज्य के वर्तमान वंशधर,सभी खाप प्रधानों को आमन्त्रित करें।

(छ) राजनीतिज्ञों से परहेज करें। यह एक सामाजिक कार्य है। किसी राजनैतिक दल की सभा नहीं। राजनीतिज्ञ लोग ऐसे

अवसर पर 'बिना बुलाये मेहमान' बनकर आने का मौका देखते हैं।

(ज) उत्तरप्रदेश के खाप नेता भी बुलाए जा सकते हैं।

(झ) मूले भाइयों को इस मिलन और समय का महत्त्व समझायें।

(ट) सहमत होने पर उनको यजमान बना उनके हाथ से यज्ञ करवाएँ।

(ठ) सहभोज की व्यवस्था हो। पहले अपने हाथों उन्हें सम्मानपूर्वक भोजन कराएँ और फिर उनके हाथ से भोजन ग्रहण करें।

(ड) हुक्का पानी मिलकर पीना अपनी परम्परा है। अन्त में वह भी होनी चाहिए। यदि हुक्के से परहेज हो तो पानी ही पीया जा सकता है।

(द) इस कार्य के लिये कुछ प्रगतिशील, धर्मप्रेमी, शिक्षित, समाजसुधारक, स्वयंसेवक आगे आएँ।

-१०. इतना कुछ हो जाने पर वैवाहिक सम्बन्ध बढावें, शुरू करना, एक क्रान्तिकारी कदम होगा। आज हरियाणा में विशेषकर झज्जर तथा महेन्द्रगढ़ में बेटी बचाओ, बेटी पढाओ कार्यक्रम के पश्चात् भी लिंग अनुपात में बहुत बड़ा अन्तर है। हमारे दकियानूसी समाज में अपने बेटे का विवाह तो असम, बंगाल, बिहार से बहुएँ खरीद कर लाना तो सामान्य बात है, पर बेटी देने पर न जाने क्या क्या बातें करते हैं। तर्क वितर्क करते हैं। भई! आज के युग में हम बेटे-बेटी को जब बराबर समझते हैं तो विवाह को लेकर फर्क क्यों? यदि किसी अन्य समझे जाने वाले दूर के प्रदेश से लाई गई बहू ने आपका सामाजिक दर्जा नहीं घटाया तो आपकी बेटी अपने ही समाज के बिछुड़े भाइयों को ब्याह देने से आपका सामाजिक दर्जा कैसे घट जाएगा? फिर वे तो अपनी बिरादरी के ही हैं। इस बात पर तर्क सहित, निष्पक्ष विचार कर आगे बढ़ें।

-११. अन्त में सबको जानने, समझने, आचरण करने की एक बात और। औरंगजेब के सेनापति अफजलखां ने शिवाजी से युद्ध से पहले शिवाजी की ससुराल (फल्टन, जिला-सितारा) में जाकर उसके ससुर नायक निंबालकर, साले बजाजी निंबालकर को परिवार सहित जबरन गोमांस खिलाकर मुसलमान बना लिया। बाद में प्रतापगढ़ में शिवाजी अफजलखां को मारकर अपनी ससुराल आए। उन्होंने कहा-'इन लोगों ने स्वेच्छा से गोमांस नहीं खाया, न ही स्वेच्छा से इस्लाम अपनाया।' 'आपत्तिकाले मर्यादा नास्ति।' शिवाजी ने सबको गंगाजल तथा तुलसीपत्र सेवन करा पुनः हिन्दू बनाया। उनसे भी पहले सन्त स्वामी रामानन्द तथा सन्त रविदास ने अयोध्या में ३५,००० धर्मान्तरितों को पुनः हिन्दू धर्म में सम्मिलित किया। आज का हिन्दू समाज ऐसा क्यों नहीं कर सकता?

-१२. आशा है जाट समाज के प्रमुख हितचिन्तक तथा अन्य हिन्दू संगठन इस कार्य की महत्ता समझेंगे तथा अपनी जाति धर्म को सबल बनायेंगे।

-मेजर रतनसिंह यादव (सेवानिवृत्त)

श्री लाल बहादुर शास्त्री, पूर्व प्रधानमन्त्री

लेखक-आनन्ददेव शास्त्री, दिल्ली सरकार

स्वतन्त्र भारत के दूसरे प्रधानमन्त्री स्व० श्री लाल बहादुर शास्त्री जी का जन्म २ अक्टूबर सन् १९०४ केदिन, बनारस के पास रामनगर में हुआ था। आपके पिता जी का नाम श्री शारदा प्रसाद था, आप कायस्थ बिरादरी से सम्बन्ध रखते थे। श्री शारदा प्रसाद इलाहाबाद में कायस्थ पाठशाला में अध्यापक थे।

सन् १९०५ की घटना है कि शारदा प्रसाद अपनी पत्नी के साथ, मकरसंक्रान्ति के अवसर पर गंगा स्नान के लिये गये हुये थे। गंगा तट पर भयंकर भीड़ थी। आप नन्हें (लाल बहादुर) को भी अपने साथ ले गये थे। भीड़ का एक रैला आया और नन्हा लाल बहादुर माता की गोद से उछल कर दूर जा गिरा। गंगा के उसी किनारे पर एक ग्वाला भी अपना टोकरा लिये, नाव की प्रतीक्षा में बैठा था। उसी समय बालक उछलकर उसके टोकरे में जा गिरा। ग्वाले ने उसे गंगा मैय्या का प्रसाद समझ कर उस पर कपड़ा डाल दिया। तभी नाव चल पड़ी किन्तु नाव में सवारी थोड़ी थी इसलिये नाव वाला नाव को फिर उसी स्थान पर ले आया जहां से नाव चली थी। उधर लालबहादुर के माता-पिता उसे खोजने में लगे हुए थे। तभी शारदा प्रसाद को बच्चा नाव में लेटा हुआ दिखाई दिया। शारदाप्रसाद ने दौड़कर बच्चे को गोद में उठा लिया। तब ग्वाला बोला-यह बच्चा तो मेरा है, मुझे वापिस दे दो। बात पुलिस तक पहुंची, तब बच्चा उसके माता-पिता को मिला।

लाल बहादुर की माता बड़ी धर्मपरायण थी, अतः उसका प्रभाव बालक पर भी पड़ा। लाल बहादुर के पिता का स्वर्गवास उनके बचपन में ही हो गया था, अतः लाल बहादुर का लालन-पालन उनके नाना श्री हजारीलाल ने किया। जो एक स्कूल अध्यापक थे। आपकी माता का नाम रामदुलारी था। आपके नाना आपकी माता से बड़ा प्रेम किया करते । लाल बहादुर की बचपन की शिक्षा मुगल सराय में हुई। कुछ समय के बाद आपके नाना जी का स्वर्गवास हो गया तब घर की जिम्मेदारी श्री हजारीलाल के छोटे भाई पर आ पड़ी और घर का खर्च चलना कठिन हो गया, तब आपकी माता रामदुलारी घरों में काम करके उस घर का खर्च चलाने लगी, जिससे बच्चों की पढाई में बाधा पड़ी।

एक दिन बहुत से बालक जिनमें लाल बहादुर भी सम्मिलित था, फल तोड़ने के लिये एक बाग में घुस गये। माली के आने पर और बच्चे तो बाग से भाग गये, किन्तु छोटा होने के कारण लाल बहादुर पकड़ा गया और माली ने उसके गाल पर एक चांटा मारा। तब लाल बहादुर ने रोकर माली से कहा कि तुझे पता नहीं मेरे पिता जी नहीं हैं, जो तूने मुझे चांटा

मारा, तब माली बोला–बेटे तुझे भी तो ध्यान रखना था कि तू बाग में न घुसता।

जब लाल बहादुर के नाना की मृत्यु हुई, उस समय आप छठी क्लास उत्तीर्ण कर चुके थे, तब आगे की पढाई करने के लिये आपको बनारस जाना पड़ा। बनारस में रामदुलारी (आपकी माता) का एक रिश्ते का भाई रहता था, वह लाल बहादुर को अपने घर पर रखने को तैयार हो गया। बनारस में जिस परिवार में आप रहते थे वह परिवार आपके साथ दो नम्बर का व्यवहार करता था। एक दिन जब रामुदलारी बनारस गई तो बच्चा उसे देखकर रोने लगा और उसने माता को अपनी बीती सुनाई, किन्तु रामदुलारी की तो ऐसी अवस्था भी नहीं थी कि वह अपने घर का खर्चा चला सके, अत: वह चुपचाप घर वापिस आ गई।

लाल बहादुर बनारस के हरिश्चन्द्र हाई स्कूल में पढता था। उस स्कूल में एक आदर्श अध्यापक जोकि अंग्रेजी पढाते थे, जिनका नाम निष्कामप्रसाद था, उनको आपकी आर्थिक स्थिति का पता चला तो वे लाल बहादुर को अपनी पत्नी भावो के पास ले गये और उससे कहा ये हमारा एक और पुत्र है इसका भी ध्यान रखना। भावो ने लाल बहादुर के लिये उसी दिन से तरह–तरह का भोजन भेजना प्रारम्भ कर दिया। कुछ दिन के बाद लाल बहादुर को महसूस हुआ कि वह उन पर बोझ बन गया है, तब लालबहादुर ने भावो के पास जाना बन्द कर दिया। तब मास्टर जी के परिवार को महसूस हुआ कि लाल बहादुर अपने को हमारे पर बोझ समझने लगा है, अत: उसने यहां आना बन्द कर दिया है। तब मास्टर जी ने लाल बहादुर से कहा कि तू हमारे बच्चों को पढाने घर आ जाया कर। तब लाल बहादुर बच्चों को पढाने मास्टर जी के घर पर जाने लगा। महीने के अन्त में जब मास्टर जी ने उसे ट्यूशन के पैसे देने चाहे तो लालबहादुर ने पैसे लेने से इन्कार कर दिया। तब मास्टर जी पैसे गुल्लक में जमा करने लगे और जब लाल बहादुर की बहन की शादी आई तब वे ९०० रुपये लाल बहादुर की माता को यह कह कर दिये कि ये पैसे लाल बहादुर के कमाये हुए हैं। तब उनकी माता ने वे पैसे स्वीकार किये। मा.निष्काम प्रसाद एक देशभक्त व्यक्ति थे। वे पाठ के बाद घन्टी में छात्रों को देश की स्वतंत्रता के विषय में बताते थे, इससे लाल बहादुर के मन में गांधी जी के प्रति श्रद्धा उत्पन्न हो गई और देशभक्त की भावना उत्पन्न हो गई और देशभक्ति की ही पुस्तकें पढने लगे। एक बार गान्धी जी बनारस में हिन्दू विश्वविद्यालय की आधारशिला रखने आए,तब लालबहादुर वहां से ५० मील दूर थे और उनके पास बनारस आने का किराया भी नहीं था, तब लाल बहादुरने एक व्यक्ति से कुछ रुपये कर्ज लिया और बनारस पहुंच गांधी जी के दर्शन किये। तभी से लालबहादुर गांधी जी के अनुयायी बन गये। इसी प्रकार बनारस में महात्मा तिलक आए, तबभी लाल बहादुर दूर से चलकर उनका भाषण सुनने गए। तब से लाल बहादुर ने अपना जीवन देश के लिये समर्पित कर

दिया।

सन् १९१९ में अंग्रेज सरकार ने रोलट एक्ट लागू कर दिया। तब गांधी जी न एक्ट के विरोध में आन्दोलन में कूद पड़े। आप १९२१ में जेल चले गये। कुछ घंटे बाद चेतावनी देकर आपको जेल से छोड़ दिया गया।

तब लाल बहादुर ने काशी विद्यापीठ में प्रवेश लिया, इस विद्यापीठ में पढते हुए लाल बहादुर के विचार और देशभक्ति से और परिपूर्ण हो गय। विद्यापीठ में पढ़ने के लिये आपको ६-७ मील पैदल चलकर जाना पड़ता था।

बाद में छात्रावास में रहते समय आप अपना भोजन स्वयं बनाते थे। अपना खर्च चलाने के लिये आप अतिरिक्त समय में खादी भण्डार में काम करने लगे, इतने पर भी आपने तत्व ज्ञान की परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की। तब आपको शास्त्री की उपाधि प्राप्त हुई। आप १९२६ मे विद्यापीठ से स्नातक बनकर निकले।

आपका विवाह मिर्जापुर में १६ मई १९२८ के दिन लालमणि के साथ सम्पन्न हुआ,बाद में लालमणि का नाम ललिता देवी हो गया। दहेज के रूप में शास्त्रीजी ने एक चरखा और कुछ गज खादी मात्र लेना ही स्वीकार किया, यद्यपि उनकी ससुराल वाले काफी सम्पन्न थे। विवाह के मन्त्र आदि शास्त्री जी ने स्वयं बोले। शास्त्री जी के साथ रहते ललितादेवी को बड़े कष्ट सहन करने पड़े और घर चलाने के लिये बहुत परिश्रम करना पड़ा। उन्होंने शास्त्री जी के जेल जाने पर अकेले घर चलाया। क्यों कि शास्त्रीजी ने तो अपना सारा समय स्वतंत्रता के कार्य के लिये समर्पित कर दिया था। कुछ समय बाद आपको कांग्रेस कमेटी का सचिव बना दिया गया।

विवाह के १८ वर्ष बाद भी ललितादेवी के पास सर्दियों के लिये केवल दो ऊनी ब्लाऊज ही थे। शास्त्री जी भी कटे फटे कपड़ों को ही ठीक करवा कर पहन लेते थे किन्तु किसी से कपड़ों के लिये नहीं कहा। यह क्रम दो दशक तक चलता रहा किन्तु उसके बाद शास्त्री जी केन्द्र में मन्त्री बन गये तभी आपको और आपके परिवार को ठीक से पहनने के लिये कपड़े मिले।

उस समय एक सोसायटी थी जिसकी आधारशिला लाला लाजपतराय जी ने रक्खी थी,आप उस सोसायटी में काम करते थे और वहां से कुछ पैसे मिलते थे उन्हीं से आप घर का काम चलाते थे।

उन दिनो पं० जवाहरलाल जी कांग्रेस में आये थे, नेहरू जी को आप पर इतना विश्वास था कि नेहरू जी अपने सभी पत्रों का उत्तर देने की जिम्मेदारी आप पर ही डाल दी थे।

सन् १९२९ में लाहौर में कांग्रेस का अधिवेशन हुआ, यहीं पर नेहरू जी पहली बार कांग्रेस के अध्यक्ष बने। नेहरू जी ने २६ जनवरी १९२९ को रावी नदी के तट पर तिरंगा फहराया था। यहीं से शास्त्री जी मातृभूमि की स्वतंत्रता का संकल्प लेकर लौटे थे।

अंग्रेज सरकार का विरोध करने के कारण शास्त्री जी को प्रथम बार १९३१ में जेल में जाना पड़ा। कुछ समय के बाद आपको जेल से रिहा कर दिया गया। १९३२ ई. में आपको फिर गिरफ्तार कर लिया गया। फिर तो आप बार-बार जेल जाते रहे। आप १२ वर्षों में सात बार जेल गये। कुल मिलाकर ९ वर्ष जेल में रहे।

शास्त्रीजी चाहते थे कि ललितादेवी स्वतंत्रता संग्राम में भाग ले। जब गांधी जी ने विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार शुरू किया तब ललिता देवी ने उसमें बढ चढकर भाग लिया। उन दिनों शास्त्री जी आनन्दभवन इलाहाबाद में छिपकर रहते थे और वहीं से सबजगह गुप्त पत्र भेजा करते।

एक बार जब शास्त्री जी जेल में बन्द थे, तब उनके घर की आर्थिक स्थिति बहुत बिगड़ गई, बच्चे बीमार थे, बड़ा कठिन समय था। शास्त्री जी के एक साथी सरजू प्रसाद जेल से पैरोल पर आए थे। उन्होंने जब शास्त्री जी के परिवार को बेहाल देखा, तब उन्होंने वापिस जेल जाकर यह बात शास्त्री जी को बताई। तब शास्त्री जी ने एक पत्र अरुणा आसफ अली को लिखा, तब अरुणा ने पूर्णिमा नामक महिला को पत्र लिखकर शास्त्री जी के परिवार को मिर्जापुर से इलाहाबाद बुला लिया और उनका सब तरह का प्रबन्ध कर दिया।

सन् १९४५ को शास्त्री जी को जेल से रिहा कर दिय गया, तब आप स्वास्थ्य खराब होने के बावजूद भी कांग्रेस को पुनर्जीवित करने में लग गये।

उत्तरप्रदेश में कांग्रेस को बहुमत मिलने पर नेहरू जी ने अपनी सहायता के लिये शास्त्री जी को लखनऊ बुला लिया। श्री पं० पन्त जो उत्तरप्रदेश के प्रथम मुख्यमन्त्री बने थे ने आपको सभा सचिव बना लिया। कठोर परिश्रम और ईमानदारी के कारण आप पन्त जी के विश्वासपात्र बन गये। सब साधन होते हुए भी शास्त्री जी का जीवन अभी भी सादा बना रहा। तब पन्त जी ने शास्त्री जी को पुलिस तथा यातायात का मन्त्री बना दिया। देश में सर्वप्रथम सड़क यातायात का आपने ही उत्तरप्रदेश में राष्ट्रीकरण किया था। तब शास्त्रीजी का नई दिल्ली में सितारा चमका और आपको कांग्रेस का महासचिव बनाया गया और नेहरू जी ने आपको राज्यसभा का सदस्य मनोनीत कर लिया तब शास्त्री जी को केन्द्रीय मन्त्रिमण्डल में रेल तथा यातायात मन्त्री बनाया गया। आपने रेल की प्रथम श्रेणी समाप्त कर द्वितीय श्रेणी को ही प्रथम श्रेणी बना दिया और तृतीय श्रेणी के डिब्बों में भी सभी सुविधाएं प्रदान की। दक्षिण में अरियालूर में एक रेल दुर्घटना में १४४ लोगों की मृत्यु होने पर रेलमन्त्री से त्यागपत्र दे दिया और एक आदर्श प्रस्तुत किया। १९५७ में शास्त्री जी इलाहाबाद से लोकसभा का चुनाव जीत गए, तब शास्त्री जी को उद्योग, यातायात एवं वाणिज्य मन्त्री बनाया गया। कामराज योजना में आपने फिर त्यागपत्र दे दिया।

१९६३ में जब नेहरू जी को दिल का दौरा पड़ा, तब नेहरू जी ने आपको फिर बिना विभाग का मंत्री बना दिया, तब आपने कश्मीर में भड़की साम्प्रदायिक हिंसा को शान्त किया।

२७ मई १९६४ को नेहरू जी का निधन हो गया, तब आपको प्रधानमंत्री बनाया गया। १९६५ में पाकिस्तान ने भारत पर आक्रमण कर दिया, तब आपने बड़ी वीरता का परिचय देते हुए सेना को उत्साहित किया और पाकिस्तान को पराजित किया। उस समय भारत में खाद्यान्न की बहुत कमी थी, आपने जय जवान, जय किसान का नारा देकर अन्न का उत्पादन बढ़वाया। इसके लिये किसानों को अच्छे बीज और खाद प्रदान किये गये।

जनवरी १९६६ में रूस के प्रधानमंत्री के निमंत्रण पर आप ताशकन्द (रूस) गये। वहां शास्त्री जी पर दबाव डालकर एक समझौते पर हस्ताक्षर कराये गये। ११ जनवरी १९६६ को ताशकन्द में शास्त्री जी का हृदयगति रुकने से निधन होना बताया गया किन्तु शास्त्री जी की छोटी बहू के बयान अनुसार शास्त्री जी को दूध में विष दिया या था। उस समय विरोधी पार्टियों की मांग के बाद भी श्रीमती इन्दिरा गांधी ने उनका पोस्टमार्टम नहीं कराया था।

ऐसे सच्चे, ईमानदार और वीर प्रधानमंत्री श्री लाल बहादुर शास्त्री जी को शतशः नमन।

सम्पर्क सूत्र :-
१११/१९, आर्यनगर, झज्जर
मो० नं० ९९९६२२७३७७

सूचना

ब्रह्मचारी वागीश्वर गुरुकुल झज्जर उर्फ महाशय अत्तर सिंह डबास मोहम्मदपुर माजरा का वर्णन, सुधारक, सर्वहितकारी, पंजाब का हिन्दी रक्षा आन्दोलन १९५७, स्वामी ओमानन्द जीवन चरित, फतहसिंह भण्डारी की जीवनी, महाविद्यालय गुरुकुल झज्जर का इतिहास आदि पत्रिकाओं व पुस्तकों में छपा हुआ है तथा इन्टरनेट पर उपलब्ध स्वामी इन्द्रवेश जी के विवरण में भी अंकित है। इन सभी सूचनाओं का संकलन करके एक पुस्तक का आकार दिया जाना है। जिसका वितरण निःशुल्क किया जायेगा। इन्टरनेट पर भी पब्लिश करने की योजना है। (7229941131)

आपसे अनुरोध है कि इन महान् सेनानी व समाजसेवी के बारे में कोई फोटो, सूचना या कोई जानकारी या वृत्तान्त हो तो १५ जनवरी २०२१ तक लिखित, ऑडियो, वीडियो आदि के द्वारा हमें वाट्सअप या इमेल पर भेजने का श्रम करें। आपके द्वारा उपलब्ध करवायी गइ सामग्री को आपके नाम व फोटो के साथ छपवाया जा सकता है।

संपर्क-योगेन्द्र डबास
वाट्सेप्प : ७२२९९४११३१
ईमेल : **aarya.savitri@gmail.com**

नेता जी सुभाषचन्द्र बोस - वचनामृत

* हम व्यर्थ में धन के लिये हाय, हाय करते हैं। हम एक बार भी तो यह नहीं सोचते कि वास्तव में धनी है कौन? जिसके पास भगवत्-भक्ति भगवत्-प्रेम है वही इस संसार में धनी है ऐसे व्यक्ति के समक्ष महाराजधिराज भी दीन भिक्षुक के समान है।
* संसार में तुच्छ पदार्थों के लिये हम कितना रोते हैं किन्तु ईश्वर के लिये हम अश्रुपात नहीं करते। हम तो पशुओं से भी अधिकक तघ्न आर पाषाण हृदय हैं।
* उस शिक्षा को धिक्कार है जिसमें ईश्वर का नाम नहीं, उस व्यकित का जन्म निरर्थक है जो प्रभु का नाम स्मरण नहीं रखता।
* हमारा धर्म नहीं रहा, कुछ नहीं रहा। जातीय जीवन तक नहीं रहा। हम अब दुर्बल-तन, दूसरों के दास, धर्महीन और पापी हो गये हैं। हाय परमात्मा! इस अनुपम देश भारत की कैसी दीन दशा है। क्या तुम हमारा उद्धार नहीं करोगे? हमारे पूर्वज आर्यों ने जिस मानव धर्म को प्रतिष्ठित किया था वह अब नष्ट हो गया है। हे करणामय हरि, दया करो, रक्षा करो।
* जगत् का मङ्गल ही प्रत्येक मनुष्य का मङ्गल है। हम भारतीय हैं। भारत का कल्याण ही हमारा कल्याण है।
* हम कब तक हाथ पर धरे धर्म की ही दुर्दशा देखते रहेंगे? हमें अब जागना चाहिये। आलस्य त्याग करके कर्मक्षेत्र में उतरना चाहिये।
* धर्म और देश के लिये जीवित रहना ही यथार्थ जीवन है। यदि सन्तान कहे कि तुम अपने स्वार्थ में ही बन्धे रहो तो समझना चाहिये कि सन्तान ही अभागी है।
* हमें प्रगति करनी ही होगी। पंथ कंटकाकीर्ण हो सकता है, यात्रा कष्टप्रद हो सकती है किन्तु हमें चलना ही होगा। हो सकता है वह दिन में आये परन्तु आयेगा अवश्य। यही मेरी एकमात्र आशा है।
* जब हम अपने महापुरुषों का उपयुक्त सम्मान नहीं सीखते तब इस भारत का उद्धार सम्भव नहीं है।
* भारत की महिलाएं नहीं जागी तो भारत कभी नहीं जागेगा।
* जब तक भारतवासी इन्द्रिय सुख के पीछे भागते रहेंगे तब तक भारत उन्नति नहीं का सकता।
* मातृभूमि के चरणों में उत्सर्ग करने के लिये मेरे पास कुछ विशेष नहीं है, केवल मन और यह तुच्छ शरीर है।
* नौकर की शृंखला से मुक्त रहकर जो देश सेवा की जा सकती है,उसकी अपेक्षा नौकरी में रहकर की जाने वाली सेवा अत्यन्त साधारण है।

आचार्य भगवान्देव जी गुरुकुल झज्जर की सेवा में प्रतिष्ठित व्यक्तियों की व्यक्तिगत, सामाजिक और देशहितैषी भावनाएं प्रस्तुत हैं।

नई दिल्ली
२१.९.१९६६

पूज्य आचार्य जी, सादर प्रणाम।

सबसे पहले मैं आपसे इस बात के लिये क्षमा याचना करूं कि मैं १३.९.१९६६ को आपके आदेशानुसार गुरुकुल में उपस्थित नहीं हो सका।.....करीब एक सप्ताह पूर्व यहां के समाचार पत्र में यह पढकर बहुत खुशी हुई कि सरकार गुरुकुल संग्रहालय के लिये ५०,००० रुपय अनुदान दे रही है। मैं यहां पर संग्रहालय का नक्शा बनाने में व्यस्त हूं । इस कार्य के लिये मुझे संसार के कुछ अन्य संग्रहालयों का भी अध्ययन करना होगा। इसलिय इसमें कुछ समय भी लग सकता है। इसको अन्तिम रूप देने से पहले यदि आप निम्नलिखित बातें स्पष्ट कर दें तो हमें सुविधा होगी।

१. संग्रहालय पर आप ज्यादा से ज्यादा कितना खर्च कर सकते हैं।

२.इसके लिए आपने कौनसी जगह चुनी है। हमारे विचार से गुरुकुल के उत्तर में रास्ते के बाईं ओर जिसके बारे में उस दिन भी बात हुई थी सबसे उपयुक्त रहेगा।

३. इस संग्रहालय स्थल की बाहरी लम्बाई-चौड़ाई अन्दाजे से।

४. मेरे विचार से संग्रहालय दो मंजिल का होना चाहिये। आपका निर्णय।

५. क्या इसमें एक ऐसा हाल शामिल कर दें जोकि विविध उपयोगी हो जैसे वर्षाकाल में सम्मेलन, फिल्म दिखाने लायक आदि आदि।

६. भवन के बारे में आपका कोई सुझाव।

कृपया इनका ब्यौरा भेजने का शीघ्र ही कष्ट करें। मैं गुरुकुल में भी आने का विचार रखता हूं जब कि मेरे पास संग्रहालय के नक्शे के एक या दो नमूने के नक्शे हैं।

इस बार के 'साप्ताहिक हिन्दुस्तान' में पाठकों की ओर से आपके उस लेख 'अण्डमान निकोबार का बारूद' की बड़ी प्रशंसा छपी है। मैं भी इसके लिये आपको बधाई देता हूं।

आपका अनुगृहीत
जयपाल सिंह डबास
SV ६९०, रामकृष्णपुरम्, नई दिल्ली-२२

[५४ वर्ष बीत गये परतु संग्रहालय भवन की योजना अभी तक अधर में ही लटकी हुईहै। आचार्य जी अपने समय में जो कर गये, उससे आगे सब बन्द है।]

रूपचन्द
२३.९.१९६६

श्रीमान् पूज्य आचार्य जी, सादर नमस्ते।

आपका एक पत्र कश्मीर यात्रा के बाद का मिला था।.....दूसरी बात पाकिस्तान ६ सितम्बर का दिन मना रहा था और दिन मनाने

का तात्पर्य महान् भारत देश पर हमला करने का था, परन्तु अपनी सरकार ने वक्त से प्रबंध कर डाला। प्रबन्ध इस प्रकार था जो भी रेजीमेंट खासकर टैंक रेजीमेंट वहां पर तैनात की थी जहां पिछले वर्ष सितंबर में लड़ाई लड़े थे। हमारी रेजीमेंट दक्खन होर्स क खेमकरण तथा खालड़ा सैक्टर दे रक्खे हैं, साथ ही फिरोजपुर भी शामिल है। अभी हम ३ सितंबर से १७ सितंबर तक अपने सैक्टरों में तैनात रहे तथा दुश्मन का मुंह तोड़ जवाब देने के वास्ते पूरे तैयार थे, परन्तु दुश्मन की हिम्मत नहीं पड़ी। विशेष बात लड़ाई फिर जल्दी ही हो जाएगी, अगर ज्यादा दिन लगे तो मार्च-अप्रेल में तो युद्ध होने की पक्की उम्मीद है और अभी हमारी रेजीमेंट फिरोजपुर में है।....

अभी कुछ दिनों बाद मैं छुट्टी आऊंगा उस वक्त संग्रहालय के लिये सामान भी इकट्ठा किया हुआ है। परन्तु कुछ चीजें ऐसी हैं जिनको लाना मना है और कुछ ऐसी हैं जो बड़ी वजनी हैं, परन्तु भरसक प्रयास करूंगा। मैं आपकी तरफ से बहुत वचनहारी हो गया हूं, सो आपसे क्षमा मांगूंगा और एक-एक पत्र रिसलदार मेजर रतनसिंह और रिसलदार रिसालसिंह बाबेपुर वालों के पास डालने का कष्ट करें और मैं भी जल्दी ही जे.सी.आ. बनूंगा।

आपका सेवक

रूपचन्द

(पहलवान, बामला भिवानी)

----०-----

कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय

कुरुक्षेत्र

परम श्रद्धेय आचार्य जी, २.११.१९६६

सादर नमस्ते।

मानव समाज की सम्मुन्नति के पीछे कुछ ही इने गिने प्रतिभासम्पन्न व्यक्तियों का हाथ होता है, शेष जनता तो भेड़-चाल की नीति का अनुसरण ही करती है। कई दशब्दियों के उतार-चढाव से युक्त प्रयत्न के उपरान्त 'हरयाणा प्रान्त' अपने सैद्धांतिक, किन्तु अपूर्ण आकृति लिए हुए, अस्तित्व में प्रथम नवम्बर १९६६ के दिन प्रकट हुआ। इस दिन सायंकाल विश्वविद्यालीय-सभा-भवन में 'हरियाणा संस्कृति' सम्बन्धी कार्यक्रम Department of State-public Relations, की ओर से प्रस्तुत किया गया, जिसका उपलक्ष्य हरयाणा-दिवस मनाना था। सामान्यतया कार्यक्रम सन्तोषजनक ही कहा जा सकता है, क्योंकि सांस्कृतिक कार्यक्रम को बहुत ही संकीर्ण अर्थों में ग्रहण करने के कारण लोग प्रायः इसे नृत्य एवं संगीत तथा नाट्यकला तक ही सीमित समझ कर संस्कृति की सैद्धांतिक रूप से हत्या करने की अज्ञानवश कुचेष्टा करते हैं। काश, कि हम संस्कृति के सैद्धांतिक तथा क्रियात्मक पक्षों को उनके वास्तविक स्वरूप में समझ सकते तथा अनावश्यक प्रकार के पतन से दूर रहते।

'हरयाणा जय' का घोष जब हर व्यक्ति के मानसिक-वायुमण्डल में प्रतिध्वनित हो रहा था तो मेरे हृदय-मन्दिर में एक महान् विभूति, जिसके तपश्चर्यामय जीवन पर न

केवल हरयाणा को अपितु समस्त भारत जनता को गौरवमय अनुभूति करनी चाहिये, का अवतरण हुआ। जिसका उद्देश्य वैदिक संस्कृति को पुनर्जीवित करके मानव-समाज को कल्याण पथ पर अग्रसर करना है, ऐसी पवित्रात्मा की चिरप्रतीक्षित मनोकामना का प्रथम चरण अपने वांछित रूप में प्रथम नवम्बर को सामने आया।

हरयाणा संस्कृति के वास्तविक रूप को सुरक्षित रखने वाली प्रातःस्मरणीय पवित्र 'गुरुकुल-संस्था झज्जर' को प्रथम श्रेय उपलब्ध है जहां कि वैदिक-ऋषियों की पवित्र एवं श्रेष्ठ परम्परा को यथासम्भव सुरक्षित रखते हुए पुनः उस जीवन पद्धति व रूप में प्रचलित करने का समुचित प्रयास हो रहा है। किन्तु आधुनिक युग जो वैज्ञानिक उन्नति एवं खाद्यविधि के क्षेत्र में प्रगति का युग है, में भारत का कृत्रिम आधार पर पाश्चात्यीकरण किया जाना वैदिक-जीवन पद्धति को अपनाने में सबसे बड़ी कठिनाई है। मैं निस्संकोच रूप से कहना चाहता हूं कि आज का भारत निर्धन भिखारियों का देश है जिनकी चारित्रिक विशेषतायें भ्रष्टाचार एवं दिवालियापन है। आज के भारतवासियों के लिये धर्म, नैतिकता या संस्कृति इत्यादि शब्द विदेशी प्रतीत होते हैं। धर्म की आड़ में व्यभिचार खुलकर खेलता है। भारतीयों में से प्रायः लोगों को अपना भौतिक अस्तित्व कायम रखने के लाले पड़ रहे हैं वैश्या रूपिणी Politics का एक उत्तरदायी राजनैतिक रगों में दौड़ने के कारण राष्ट्रीय-जीवन का प्रत्येक पक्ष अवांछनीय रूप से कुप्रभावित है, जिसके परिणामस्वरूप सभी शिक्षित कहे जाने वाले व्यक्ति उचितानुचित ढंग से अपना स्वार्थ सिद्ध करने में जुटे हुए हैं। रिश्वतखोरी, बेईमानी, भाई भतीजावद, विश्वासघात, चरित्रहीनता, अवसरवादिता, चापलूसी इत्यादि का बोलबाला सामान्य भारतीय जनता को पथभ्रष्ट करके असमञ्जस के वातावरण में रहने के लिये बाध्य कर रहा है। मुट्ठीभर धूर्त किस्म के अवसरवादी राजनैतिक नेता कहे जाने वाले व्यक्ति, ४८ करोड़ व्यक्तियों के भाग्य के साथ खिलवाड़ करने में जरा सी भी लज्जा का अनुभव नहीं कर रहे हैं तथा पाशविक किस्म के आमोद-प्रमोद से युक्त निकृष्ट कोटि के जीवन को सतत चालू रखने के लिए विभिन्न प्रकार के हथकण्डों का सहारा लेकर, विदेशों से विभिन्न रूपों में ऋण लेकर, न केवल भारत की वर्तमान दशा को भी दयनीय बनाने की कुचेष्टा कर रहे हैं अपितु भावी पीढी के लिए विषैला वातावरण उत्पन्न करने का अप्रत्यक्ष रूप से कुप्रयास भी कर रहे हैं।

मान्यवर! सभी कुछ आपकी आंखों के सामने घटित हो रहा है, 'क्या, क्यों, कैसे' हो रहा है-इस विषय से आप भली भांति परिचित हैं। मैं राष्ट्रनिर्माण या समाजोद्धार का झूठा ढोंग रचने की अपेक्षा व्यक्तिनिर्माण, परिवार निर्माण की शैली या विधि को प्राथमिकता देना उचित समझता हूं। थोथे आदर्शवादियों एवं सिद्धान्तवादियों से राष्ट्र एवं समाज का सबसे अधिक नुकसान हुआ है और हो रहा है। थोथे

प्रचारक आत्मशत्रु एवं समाजद्रोही हैं। आज राष्ट्र को यथार्थवादियों, जो ज्ञान के सैद्धांतिक एवं क्रियात्मक-इन दोनों पक्षों को समन्वित करके आत्मनिर्माण के माध्यम से समाजोद्धार व राष्ट्रोन्नति के लिये अपने जीवन का उत्सर्ग कर सकें, की आवश्यकता है।

मेरी हार्दिक मनोकामना है कि गुरुकुल झज्जर के आदर्श ब्रह्मचारी, वेदों में निहित विज्ञान की खोज एवं अन्वेषण करके वैज्ञानिक सिद्धांतों को प्रतिपादित करने के कठिन प्रयास द्वारा अपनी पवित्र प्रतिभा व मेधा का प्रत्यक्ष प्रमाण प्रस्तुत करते हुए भौतिकवादी पश्चिमी राष्ट्रों के महान् वैज्ञानिकों की पंक्ति में समकक्ष रूप से खड़े होकर भौतिकवाद एव अध्यात्मवाद का समन्वय हो सके-इस दिशा की ओर पग उठानें का प्रयत्न कर सकेंतो मेरा विश्वास है कि प्राचीन वैदिक परम्परा का पुनर्जीवन सम्भव है। राष्ट्र की सर्वांगीण उन्नति इसके नागरिकों की सर्वांगीण उन्नति पर निर्भर करती है।

वह दिन कब आयेगा, जब हरयणा के प्रत्येक युवक एवं हरेक नयुवती का मुखमंडल ब्रह्मचर्य एवं वैदिक ज्ञान से देदीप्यमान होगा तथा अन्य प्रान्तों को भी वैदिकजीवन-पद्धति को ग्रहण करने के लिये प्रेरित करेगा तथा प्यारा भारत पुनः आत्मनिर्भर होगा। सबको नमस्ते।

भवदीय
भीम सिंह

---o---

रूपचन्द कुश्ती प्रशिक्षक
दक्खन होर्स
C/056 APO
१३.११.१९६६

श्री पूज्य आचार्य जी,

सादर नमस्ते।

आपने जो गऊ माताओं का वध बचाने के विषय में हजारों आदमियों के साथ जलूस निकाल कर सत्याग्रह किया, जेल गये हैं, इसकी बाबत हम सब की तरफ से आप तथा गोभक्तों को बधाई देते हैं। आप ही महानुभाव हैं जो देश के कमजोर कर्णधारों को सीधा चलाना सिखाते हैं। इस हुकूमत में गौ के लिये कोई सुनाई नहीं होती थी। आज आपने सरकार की आँखें खोल दी हैं। और आपकी ही मेहरबानी से हरयाणा आजाद हुआ, परन्तु हुकूमत में कोई जाट नहीं लिया गया , पता नहीं यह क्या कमजोरी है। और आप से तो हम सब यही प्रार्थना करेंगे, आप अपना ज्यादा समय पुस्तक लिखने में ही लगायें क्योंकि हरयाणा में आप पहले महान् आदमी हैं जिन्होंने सच्चाई पर लेखनी उठाई है और वह लेख लिख रहे हैं। एक हरियाणा ही नहीं भारत तथा संसार वालों को भी बहुत अच्छा रास्ता दिखाया है और दिखाते रहेंगे। मैं आपकी तारीफ नहीं कर रहा। आपकी तारीफ वास्ते भी एक नहीं कई एक पुस्तकें लिखी जा सकती हैं। परन्तु हम तो इस विषय में भगवान् से आपके स्वास्थ्य की विनती करते रहेंगे।

---o---

स्वामी ओमानन्द जी के जन्म स्थान नरेला निवासी प्रो० बलजीतसिंह आचार्य जी के विशेष श्रद्धालु भक्तों में से हैं। वे लिखते हैं:-

जाट वैदिक कालेज बड़ौत
४.१.१९६७

पूज्यपाद आचार्य जी,

चरण स्पर्श।

व्यक्तिगत रूप से मिलने की सोच रहा था और कई महत्त्वपूर्ण एवं आवश्यक विषयों पर आपकी सम्मति एवं आपका आशीर्वाद चाहता था, किन्तु कालेज में बी.एस.सी. एवं एम.एस.सी. आदि कक्षाओं की परीक्षायें चल रही हैं, इसलिये व्यक्तिगत रूप से मिलने का सौभाग्य प्राप्त नहीं कर सका।

मेरी इच्छा अब आगे नौकरी करने की नहीं है। वैसे तो अंग्रेजी पढे लिखों पर आपका विश्वास बिल्कुल नहीं है, इसीलिये अभी मैं आपको विश्वास तो (नहीं) दिलाता, किन्तु इच्छा प्रकट करता हूं। इस प्रकार की उधेड़बुन परिस्थितियों में आपकी सलाह लेना मैं आवश्यक ही नहीं अपितु अनिवार्य समझता हूं। देश के इस अनैतिक एवं हर प्रकार से पतित समय में देश में क्रान्ति की महत् आवश्यकता है। विशेष रूप से गन्दगी खानपान और शिक्षा में आ गई है। इस दूषित शिक्षाप्रणाली एवं तामसिक खानपान में आमूलचूल परिवर्तन आज की मांग है। आपके पथ प्रदर्शन एवं नेतृत्व की प्रतीक्षा आज सारा समाज जोह रहा है। युवक समाज की नाड़ियों में वही शिवा एवं प्रताप का रक्त बह रहा है। जवानों के हृदयों में रामप्रसाद बिस्मिल जैसी क्रान्ति की अग्नि धधक रही है, चन्द्रशेखर और भगतसिंह जैसी निर्भीकता उनके चहरों पर दृष्टिगोचर हो रही है, किन्तु इस बिखरी हुई तरुण शक्ति को संगठित एवं एकसूत्र में पिरोने की आवश्यकता है।

श्रद्धेय आचार्य जी जितनी मेरी श्रद्धा आप में है, इस बात को केवल मैं ही समझता हूं, मैं आपको भावावेश में नहीं अपितु सच्ची आत्मा से निकली हुई आवाज के आधार पर विश्वास दिलाता हूं कि यदि आप अपने अमूल्य समय का कुछ भाग युवकों के नेतृत्व में दे दें तो बहुत ही निकट भविष्य में एक विशाल संगठित तथा शक्तिशाली युवक सेना तैयार हो जायेगी।

अधिक न लिखता हुआ पत्र की प्रतीक्षा में

आपका सदैव

बलजीत

वचनामृत

● उस शिक्षा को धिक्कार है जिसमें ईश्वर का नाम नहीं, उस व्यक्ति का जन्म निरर्थक है जो प्रभु का नाम स्मरण नहीं करता।

● हम व्यर्थ में धन के लिये हाय हाय करते हैं। हम एक बार भी तो यह नहीं सोचते कि वास्तव में धनी है कौन? जिसके पास भगवत्-भक्ति भगवत्-प्रेम है वही इस संसार में धनी है ऐसे व्यक्ति के समक्ष महाराजाधिराज भी दीन भिक्षुक के समान है। **-नेताजी सुभाषचन्द्र बोस**

मां की पुकार

-महन्त चन्द्रनाथ

दिसम्बर २०२० से आगे

उन्होंने खूब समझदारी से काम लिया। पं० हीरा वल्लभ त्रिपाठी, ठाकुर फूलसिंह चौहान, लाला अजितप्रसाद जैन, आदि वकील तथा पं० देव शर्मा जी, पं० देवराज सेठी, पं० रामचन्द्र वैद्य, मौलाना मंजूर उलबव्वी आदि महानुभाव अपनी उन चीजों को, जो उनकी क्लासों के सुभीते से मिलती थी, अन्य साथियों में बांट देते थे। इनकी इस उदारता और बुद्धिमानी से किसी के दिल में ईर्ष्या तो पैदा हुई ही नहीं बल्कि कभी-कभी बीमारी के समय इनसे मिलने वाली किसी चीज पर सन्तोष भी प्रकट किया जाता था कि चलो, हमें न सही पर इसकी क्लास भी कुछ काम की चीज साबित हुई। इस प्रकार सहारनपुर के सभी कैदियों के सद्भाव, समझदारी को जब मैंने गौर से देखा तो मेरा हृदय खिल उठा, क्योंकि इनका यह बर्ताव इस बात को जितला रहा था कि हमें किसी भी कुटिल जाल में फसा कर अब बहुत दिन गुलाम नहीं रक्खा जा सकता।

।। पहली भिड़न्त।।

इस बीसवीं सदी के यों तो कई साल मारके के गुजरे और शायद गुजरें भी, पर यहसन् १९३० का साल एक ऐसा महत्त्व का साल था जो आनेवाली भारतीय सन्तान के सामने दो बातों का उदाहरण रक्खेगा। एक यहकि जिन-जिन बहादुरों ने मातृभूमि के उद्धार के लिये इस साल के आन्दोलन में अपना सर्वस्व स्वाहा कर दिया, उन-उन के कुटुम्ब और खानदान में पैदा होने वाले लड़के स्कूल पाठशलाओं में पढते समय जब अपने इन वीर पूर्वजों के बलिदान का इतिहास पढेंगे तो गर्व और गौरव से फूल उठेंगे। इन शहीदों की कल्पित मूर्ति उनकी आँखों के सामने नाचने लगेगी और उनकी देह का एक एक रोम एक-एक परमाणु इनके त्याग साहस और वीरता की प्रशंसा करेगा। कृतज्ञता और श्रद्धा से उनका मस्तक इनके चरणों में झुक जाया करेगा। वे बाग बगीचों में पहुंचा करेंगे और वहां से श्रद्धा के फूलों की माला में गूंथ कर इनकी कब्रों-समाधि व श्मशानों पर चढाते हुए प्रेम के आंसू बहाया करेंगे, क्योंकि वे जिस स्वतंत्र हवा में विचरेंगे वह इन्हीं बहादुरों के बलिदान से पैदा हुई होगी।

दूसरी यह कि जिन-जिन लोगों ने ऐसे पर्व के समय इस बहती हुई गंगा में गोता नहीं लगाया, यानि कुछ भी देश सेवा नहीं की, बल्कि उलटा देश के साथ गद्दारी और विश्वासघात किया है, उनके खानदान में पैदा होने वाले लड़के जब इनका इतिहास पढेंगे तो मारे शर्म के उनकी गर्दन नीची हो जायेगी, उनके हृदय में एक विद्रोही तूफान खड़ा हो जायेगा। वे श्मशानों के पास से गुजरते हुए इनकी राख के ढेर में ठोकर मारकर कह दिया

करेंगे, ये उन हतभाग्य बुजुर्गों की राख के ढेर हैं जो सदा गुलाम रखना चाहते थे।आह! कितना अन्तर? कितनी विषमता, एक शर्मदार और हयादार मनुष्य के लिये तो यह जीवन मरण का प्रश्न रखता है। पर कोई इस बात को सोचे समझे तब न।

ठीक इन दोनों बातों का वर्णन करने वाले भारत के आधुनिक इतिहास लेखक के लिये इस सन् १९३० के साल ने काफी मसाला तैयार कर दिया है।

जेल भर में नमक कानून की धज्जियां उड़ाने के बाद सैकड़ों स्वयंसेवक देहातों में फैलकर करबन्दी के लिये तैयारी कर रहे थे। लड़ाई जोरों से ठन गई थी। रोजमर्रा गिरफ्तारियों का तांता सा बध गया था। ये ही एकाध-देश के साथ विश्वासघात करने वाले लोग जब जेल के अन्दर की अदालत में अपने ही भाइयों के खिलाफ गवाही देने आते तो कुछ गर्म मिजाज कांग्रेसी कैदी अपना अंगूठा हिलाकर दण्ड पेलकर छाती पीटकर या ताल ठोक कर मतलब किसी भी इशारे से अपने ही पैरों में आप कुल्हाड़ी न मारने की चेतावनी के उद्देश्य से उन्हें शर्मिन्दा करते और यह चेलैन्ज भी देते कि हमें दबाने के लिये तुम दुश्मन की कितनी ही सहायता करो, हम कभी झुकने वाले नहीं हैं।

इस घमासान लड़ाई के समय एक तो कुछ भी देश सेवा न करना यों ही लज्जा की बात थी। दूसरे अपने ही भाइयों के खिलाफ अदालत में उन्हीं के सामने गवाही देना तो बेशर्मी का पहाड़ सिर पर उठाना था। बेचारे गवाह झेंप जाते और जमीन में गड़ जाते थे। बड़ी मिन्नत खुशामद से लाये अपने गवाहों की यों मिट्टी खराब होती देखकर पुलिस वालों ने जेलर की शिकायत कर दी कि यह राजनैतिक कैदियों को नियन्त्रण में नहीं रख सकता है। अगले दिन सुबह जेलर ने हुक्म दिया कि ११ बजे से ४ बजे तक सब कांग्रेसी कैदी बैरकों में बन्द रहेंगे। यह हुक्म कुछ खटका तो सही पर मान लिया गया क्योंकि अपने साथियों की उस चेष्टा से कुछ कांग्रेसी कैदी भी खुश नहीं थे। और अपना प्रबन्ध ठीक रखने के लिये जेलर का ऐसा करना नाजायज समझते थे। पर एक बीमार आदमी ठाकुर मुकुन्द सिंह खुली हवा में बाहर बैठा रह गया था जिसे वार्डरों ने उसे अन्दर जाने को कहा और तबीयत खराब होने की वजह से जब उसने वहीं बैठा रहने की कही तो उन्होंने जेलर से शिकायत की। बस क्या था, उसने एकदम हुक्म दे डाला कि उसे खींचकर अन्दर ले जाओ और वैसा ही हुआ। यह भारी अपमान था और था एक निरपराध बीमार आदमी का। जिस बात के लिये हम लोग अन्दर बन्द किये जा रहे थे उसे यह बीमार नहीं कर सकता था। जेलर के इस नादिरशाही हुक्म ने सबके हृदय पर गहरी चोट पहुंचा दी, कैदी कांग्रेस कमेटी की बैठक हुई, और उसमें यह तय हुआ कि जिन-जिन महानुभावों का आज मुकदमा होने वाला है वह अपने आप अदालत में हाजर न हों। अगर

जबरदस्ती उठाकर ले जायें तो कांग्रेस के वकील से तो इस घटना का जिक्र कर दें, पर विरोधस्वरूप हाकिम के किसी भी प्रश्न का उत्तर न दें। सोई हुआ। गंगोह के लाला दाताराम मास्टर का सबसे पहले नम्बर आया। उनके चलने से इन्कार करने पर सिपाही अपने कन्धे पर उठाकर ले गये। लेकिन उन्होंने हाकिम के सामने कुर्सी पर बैठाया जाते ही बराबर को मुंह फेर लिया और हाकिम के प्रश्न के उत्तर में एक भी शब्द अपने मुख से न निकाला। कांग्रेसी वकील के पूछने पर जब उन्हें इस बात की मालूम हुई तो उन्होंने हाकिम के सामने जेलर की ज्यादती का विरोध किया। बस इसी एक बात को लेकर जेलर तथा राजनैतिक कैदियों में कुछ अन्दरुनी रंजिश पैदा हो गई। लगभग ६ बजे का समय था, अदालत उठ चुकी थी, साधारण कैदी बन्द हो चुके थे, हम लोगों के बन्द होने का टाईम २ बजे का था, भोजन के बाद सड़कों पर इधर उधर घूम रहे थे। इसी समय किसी के दाखिल हुए कपड़े लिवा लेकर जेलर आया। ऐसे वक्त यह देखने के लिये कि किसका क्या आया है, कई आदमी इकट्ठे होजाया करते थे, कपड़े कृपाल सिंह के थे और वह कुछ दूरी पर दूसरे आदमियों से बातें कर रहा था। उसे नम्बरदार ने पुकारा-जेलर ने पुकारा, हम में से एक दो ने आवाज लगाई पर वह इस कदर बातें करता रहा मानो उसने कुछ सुना ही नहीं। आखिर और आवाजें लगाई गई जिससे वह सहज-सहज इधर आने लगा। लेकिन पास आने पर भी एक दूसरे आदमी के साथ इस प्रकार बातें करने लगा जैसे उसको किसी ने बुलाया ही नहीं है। जेलर तो पहले ही जल भुन रहा था, इससे उसका गुस्सा और भी चोटी तक ऊपर पहुंच गया। फिर भी उसने कुछ शान्ति से काम लेते हुए तेज स्वर से कहा-कैसा बेहूदा आदमी है? इतनी देर से पुकार रहे हैं तो भी इधर ध्यान नहीं देता। तूने ये कपड़े लेने हैं कि नहीं? अगर न लेने हों तो मैं इन्हें वापिस कर देता हूं वह कपड़े उठाने लगा। जेलर ने कहा-इन्हें अच्छी तरह गिन ले, जितने इस लिस्ट में लिखे हैं उतने हैं कि नहीं और फिर इसकी पीठ पर वसूली के दस्तखत कर दे।

वह कपड़े को झाड़कर गिनने लगा। पर इस ढंग से झाड़ा कि जिससे कपड़े का छोर जेल के मुंह के पास जाकर फटकता था। जेलर ने कहा-गर्दा आता है जरा परे को झाड़।, उसने फिर उसी तरह झाड़ा, फिर कहा, उसने उसी तरह झाड़ा और तीसरी बार भी झाड़ने ही वाला था कि जेलर खुद पीछे को हट गया और उसने जमादार को पुकारा। बात की बात में ५-७ नम्बरदार सिपाही आ गये, हुक्म हुआ इस फौरन काल कोठड़ी में ले जाओ और वैसा ही हुआ। वे लोग उसे इस प्रकार धकेल कर ले गये मानो उसके साथ उनकी कोई पहले से दुश्मनी थी और उसका बदला

चुकाने का आज अच्छा मौका हाथ लगा था। उनकी इस फुर्ती को देखकर एक बात साफ हो जाती है और वह यह है कि गुलामों में आत्मसम्मान तथा दूसरों के भावों को परखने का माद्दा नहीं होता। और इसीलिये जब वे एक बार अपने मालिक को खुश करने की ठान लेते हैं तो उसके हुक्म की तामील इतनी बेरहमी से करते हैं जिससे उन्हें यह ख्याल भी नहीं रहता हम इन्सान हैं कि हैवान।

खैर अब तक हम सब की सहानुभूति जेलर के साथ थी, क्योंकि हम लोग अपने साथीं का असभ्य व्यवहार देखकर खुद लज्जित से हो रहे थे उसे घृणा की दृष्टि से देख रहे थे लेकिन जेलर के बिना सोचे समझे ही एकदम आग बगूला होकर उसे काल कोठड़ी की सजा दे बैठने से हमारी वह सहानुभूति जेलर के सिर से उतरकर कृपाल सिंह के साथ हो गई। फिर कमेटी की मीटिंग हुई और चटपट निश्चय किया गया कि इस दुर्व्यवहार के विरोध में कोई भी कैदी बैरक के अन्दर आप से बन्द होने के लिये उधर न जाय।

हम मानते हैं कि हमारे २०-३० साल के बीच के नौजवान की मदान्धता का कुछ कसूर था पर उसके लिये तो हम खुद ही पश्चात्ताप कर रहे थे, और उसे काफी डांट भी देने वाले थे। लेकिन हमारे किसी भी निश्चय पर पहुंचने के पहले ही उसने अपना ब्रह्मास्त्र छोड़ दिया था और इसके इस अमोघ अस्त्र का निवारण करने के लिये हमारे पास बस इसके सिवाय और कुछ भी चारा न था कि हम खुद बन्द न होकर उन्हें लाचार कर दें।

इस समय हम लोग लगभग ८० आदमी थे, वार्डर लोग एक-एक को उठाकर कमरे में ले जाते तो रात के १० बज जाते। और उनको इस तरह दिक करने का यह एक अच्छा तरीका था। बल्कि कोई-कोई नौजवान लड़के तो वृक्षों के ऊपर चढ़कर बैठ गये थे, जिन्हें वहां से उतार कर कमरे में ले जाना बहुत ही मुश्किल था। बहुत बहस मुबाहिसा हुआ, बन्द होने का समय भी निकल गया। आखिर जेलर के होश ठिकाने आये और हमारे साथी को हमें सौंप दिया। लेकि इस हार से उसके अन्दर बदले की आग जलने लगी और वह किसी मौके की बाट देखने लगा। सचमुच उसने हमारे ऊपर कई बार हमले कर अपनी उस जलन को शान्त किया, पर इससे क्या? हम तो सब कुछ बर्दाश्त करने के लिये वहां गये ही थे। कहावत भी है कि ओखली में सिर दिया तो मूसल की चोट का डर क्या।

क्रमशः

वचनामृत

संसार के तुच्छ पदार्थों के लिये हम कितने रोते हैं किन्तु ईश्वर के लिये हम अश्रुपात नहीं करते। हम तो पशुओं से भी अधिक कृतघ्न और पाषाण-हृदय हैं।

-नेताजी सुभाषचन्द्र बोस

सदा उत्साहित रहने के उपाय

-स्वामी देवव्रत सरस्वती

दिसम्बर से आगे.....

४. अधिक महत्त्वाकांक्षी न बने-

यद्यपि बड़ा लक्ष्य बनाना कोई बुरा नहीं है। परन्तु याद रखें-शेखचिल्ली के समान सपने देखना उपहास का पात्र बनना है। कोई बड़ा कार्य करना है तो उसे टुकड़ों में बांट कर करें। जब कार्य का एक भाग पूरा हो जाये तो फिर दूसरा-तीसरा करने से बड़ा कार्य भी आसान हो जायेगा। किसी भी कार्य की योजना बनाते समय अपने क्षमता, संसाधन और सहायकों का मूल्यांकन कर लेने से सफलता की अधिक संभावना रहती है।

५. वर्तमान में जीयें :-

भूतकाल से शिक्षा लेकर वर्तमान में कार्य करते हुये भविष्य बनायें। जो व्यतीत हो चुका वह समय अब आना नहीं है। इसलिये उसके लिये शोक करना या चिन्तित होना व्यर्थ है। अभी जो आगे आने वाला है उस समय परिस्थितियां जैसी रहेंगी वैसा विचार कर लिया जायेगा। आपके सामने वर्तमान है वही आपका है। उसे ही सुखद, सुन्दर सुव्यवस्थित बनानेका प्रयत्न करें। प्रतिदिन प्रातः यह चिन्तन करें कि आजका दिन बहुत ही अच्छी प्रकार से व्यतीत होगा।

६. तनाव रहित रहें :-

तनाव व्यक्ति और वातावरण के मध्य होने वाली क्रिया और प्रतिक्रिया को कहते हैं।

शोक सन्देश

महाशय धर्मपाल जी नहीं रहे

आर्यसमाज के प्रसिद्ध दानवीर महाशय धर्मपाल जी (महाशयां दी हट्टी एम.डी.एच.) मसालों के प्रसिद्ध निर्माता और वितरक का ३.१२.२०२० को हृदयगति रुक जाने से ९८ वर्ष की आयु में निधन हो गया। इन्हीं द्वारा चालित माता चानन देवी हस्पताल जनकपुरी (दिल्ली) में ये उपचारार्थ प्रविष्ट थे।

वसंत विहार, दिल्ली के इनके निवास स्थान से चलकर शवयात्रा पंचकुइया शमशान घाट तक हजारों लोगों की उपस्थिति में पधारी। वहीं हजारों सज्जनों की उपस्थिति में पूर्ण वैदिक विधि से इनकी अन्त्येष्टि की गई। दिल्ली के अनेक आर्यसमाजों के अधिकारी, श्री मनीष सिसोदिया उपमुख्यमंत्री दिल्ली, डॉ० योगानन्द शास्त्री पूर्व मन्त्री दिल्ली, डॉ० सत्यपाल सिंह सांसद, बचन सिंह आर्य, आचार्य विजयपाल योगार्थी गुरुकुल झज्जर, स्वामी सम्पूर्णानन्द सरस्वती करनाल गुरुकुल नली, आचार्य ऋषिपाल गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ, आचार्या सुकामा गुरुकुल रूड़की रोहतक, रामपाल शास्त्री और गुरुकुल गौतमनगर के ब्रह्मचारी, मा० रामपाल प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, कन्हैयालाल आर्य परोपकारिणी सभा अजमेर, डॉ० ओम्प्रकाश योगी पाली, दिल्ली आर्यवीर दल के जितेन्द्र भाटिया आदि, आचार्य राजेन्द्र जी गुरुकुल कालवा, धर्मपाल आर्य प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली, विनय आर्य मंत्री दिल्ली प्रतिनिधि सभा, राजेन्द्र धनखड़ बहादुरगढ इत्यादि सैकड़ों परिचित महानुभाव पधारे थे।

-विरजानन्द दैवकरणि

९४१६०५५७०२

गुरुकुल झज्जर की विशेषता

- प्राचीन आर्ष प्रणाली के द्वारा वेदादि शास्त्रों और संस्कृत भाषा के पठन-पाठन को जीवित बनाये रखना।
- ब्रह्मचर्य के प्रचार-प्रसार के साथ-साथ जनता में आसन-प्राणायाम आदि का क्रियात्मक प्रचार करना।
- स्कूलों, कॉलजों, ग्रामों और नगरों में यज्ञ तथा धर्मोपदेशों के द्वारा युवा पीढ़ी को उत्साहित करके संस्कारवान् बनाना।
- संस्कृत-हिन्दी के जनोपयोगी ग्रन्थों का प्रकाशन और वितरण करना।
- भारत के प्राचीन इतिहास के अन्वेषार्थ पुरातत्व संग्रहालय के आधार पर छात्रों को शोधकार्यार्थ प्रेरित करना।
- आयुर्वेदिक औषधालय और चिकित्सालय के द्वारा औषध तैयार करके रुग्ण व्यक्तियों को स्वास्थ्यलाभ प्राप्त करने का अवसर प्रदान करना।
- प्राकृतिक चिकित्सा पद्धति के माध्यम से कष्टसाध्य रोगों का उपचार करना।
- अतिथि के रूप में पधारने वाले परोपकारी, विद्वान्, संन्यासी आदि सज्जनों का नि:शुल्क रूप में भोजन-आच्छादन से यथेष्ट सत्कार करना।
- वैदिक संस्कृति सभ्यता और गोरक्षा आदि पर यदि कोई आपित्त आती है तो उसके निराकरण के लिये सत्याग्रह आदि क्रियाकलापों के द्वारा यथासंभव आपत्ति को दूर करना।
- जनता में भ्रम और अज्ञानवश अवैदिक मान्यताओं और पाखण्डों से होने वाली हानि दिखाकर लोगों को सन्मार्ग पर लाने का प्रयत्न करना।
- गुरुकुल में अध्ययन करने वाले विद्यार्थियों को शिक्षा के साथ-साथ शारीरिक परिश्रम से होने वाले कार्यों के प्रति भी जागरूक और उत्साहित करना।
- लेखक के रूप में वेद, उपनिषद्, स्मृति, दर्शन, व्याकरण, छन्द, ज्योतिष आदि ग्रन्थों के भाष्यकार भी इस गुरुकुल की देन हैं।
- योगासन, प्राणायाम, व्यायाम, कुश्ती, मल्लखम्भ, लाठी, भाला, तलवार आदि विविध प्रकार के भारतीय व्यायाम की शिक्षा देने वाले स्नातक भी इसी गुरुकुल से सम्बद्ध हैं।
- वेद, दर्शन, उपनिषद्, व्याकरण, छन्द, काव्य, आयुर्वेद, इतिहास, ब्रह्मचर्य, व्यायाम, प्राणायाम और समाज सुधार सम्बन्धी संस्कृत-हिन्दी के सैकड़ों ग्रन्थों का प्रकाशन गुरुकुल की ओर से निरन्तर चलता रहता है।

धनुर्वेद पुस्तक की समीक्षा

स्वामी देवव्रत जी ने धनुर्वेद नामक अपने ग्रन्थ का पुनः प्रकाशन किया है।

धनुर्वेद में अनेक प्रकार के शस्त्रास्त्र निर्माण के अतिरिक्त युद्धोपयोगी व्यूह, मल्लयुद्ध, मुष्टियुद्ध, तैराकी आदि प्रकार की विद्याओं का वर्णन मिलता है। महषि दयानन्द जी ने अंगिरा ऋषि और भारद्वाज आदि ऋषियों द्वारा निर्मित धनुर्वेद का अध्ययन करने का वर्णन करते हुए यह संकेत भी दिया है कि ये ग्रन्थ प्रायः नहीं भी मिलते। धनुर्वेद मे अस्त्र शस्त्र विद्या का विचार है। इस उपवेद में ब्रह्मास्त्र, पाशुपत अस्त्र, नारायण अस्त्र, वरुण अस्त्र, मोहन अस्त्र, वायव्यास्त्र आदि की व्यवस्था लिखी है। इस विद्या को तीन वर्ष में पढ़ें पढावें।

अन्वेषणकर्ता सज्जन लुप्तप्राय गन्थों की खोज करते रहते हैं। इसी क्रम में महर्षि वासिष्ठ धनुर्वेद संहिता जयपुर के सनथली वनथली कोटा के ब्राह्मण के पास संवत् १९३३ में प्राप्त हुई। इसकी प्रतिलिपि चूरू के रामगढ में मिली। एक पुस्तक इसी विषय की खड्ग विलास यन्त्रालय की तथा दूसरी प्रति अलीगढ जिले में छपी मिली। संवत् १९३३ की प्रति को पण्डित हरदयाल स्वामी ग्राम कंवाली, रेवाड़ी ने संवत् १९५५ (१८९९) में पण्डित ईश्वरीप्रसाद रामचन्द्र अध्यक्ष संस्कृत पुस्तकालय सदर दरवाजा मेरठ से प्रकाशित कराया।

स्वामी देवव्रत जी ने इस वासिष्ठी धनुर्वेद संहिता को, औशनस धनुर्वेद को तथा शार्ङ्गधर धनुर्वेद को यथासाध्य परिश्रमपूर्वक प्रकाशित कराया है। न ग्रन्थों में दिये गये विषयों की स्वामी जीने उदाहरण और चित्रों सहित व्याख्या की है। इससे लुप्त धनुर्वेद का पर्याप्त भाग सुरक्षित हो गया है। धनुर्विद्या के चित्र गुतकालीन स्वर्ण मुद्राओं से लेकर लुतपरम्परा को उजागर कर दिया है।

इस महत् कार्य के लिये स्वामी जी तथा प्रकाशक महोदय बधाई के पात्र हैं। परन्तु एक बात यह है कि मल्लपुराण से जो माँस बिषय कथन किया है, वह धर्म की दृष्टि से अभक्ष्य है। अतः वह नहीं देना चाहिये था। चरक सुश्रुत में मांस के गुण दोष लिखे हैं, इससे उसका सेवन करना अनुचित ही है। आयुर्वेद पदार्थों के गुण दोष बताता है, परन्तु धर्म की दृष्टि से अभक्ष्य का त्याग होना चाहिये। यज्ञ से भूत निकला, वह तलवार बन गया ऐसी असम्भव और असत्य बातों को भी ग्रन्थ में स्थान नहीं देना चाहिये था। पूरा धनुर्वेद नहीं मिलता तो उसके यत्र तत्र बिखरे भागों को एकत्र करना अति परिश्रम साध्य कार्य है। सत्कर्म को प्रोत्साहन देना ही चाहिये। सभी की दृष्टि समान नहीं होती।

-विरजानन्द दैवकरिण
९४१६०५५७०२

हमारी विशिष्ट औषधियाँ

संजीवनी तैल

यह तैल घाव के भरने में जादू का काम करता है। भयंकर फोड़े-फुन्सी, गले-सड़े पुराने जख्मों तथा आग से जले हुए घावों की अचूक दवा है। कोई दर्द या जलन किये बिना थोड़े समय में सभी प्रकार के घावों को भरकर ठीक कर देता है। खून का बहना तो लगाते ही बन्द हो जाता है। चोट की भयंकर पीड़ा को तुरन्त शान्त कर देता है। दिनों का काम घण्टों में और घण्टों का काम मिनटों में पूरा कर देता है।

मूल्य : 100 रुपये

च्यवनप्राश

शास्त्रोक्त विधि से तैयार किया हुआ स्वादिष्ट सुमधुर और दिव्य रसायन (टॉनिक) है। इसका सेवन प्रत्येक ऋतु में स्त्री, पुरुष, बालक व बूढ़े सबके लिए अत्यन्त लाभदायक है। पुरानी खांसी, जुकाम, नजला, गले का बैठना, दमा, तपेदिक तथा सभी हृदयरोगों की उत्तम औषध है। स्वप्नदोष, प्रमेह, धातुक्षीणता तथा सब प्रकार की निर्बलता और बुढ़ापे को इसका निरन्तर सेवन समूल नष्ट करता है। निर्बल को बलवान् और बूढ़े को जवान बनाने की अद्वितीय औषध है। च्यवन ऋषि इसी रसायन के सेवन से जवान होगये थे।

मूल्य : 1 किलो 300 रुपये

नेत्रज्योति सुर्मा

सुर्मे तो बाजार में पर्याप्त मात्रा में मिल जाते हैं परन्तु इतना लाभप्रद और सस्ता सुर्मा मिलना कठिन है। इसके लगाने से आंखों के सब रोग जैसे आंखों से पानी बहना, खुजली, लाली, जाला, फोला, नजर की कमजोरी आदि विकार दूर होते हैं तथा बुढ़ापे तक आंखों की रक्षा करता है। दुखती आंखों में भी इसका प्रयोग अत्यन्त लाभप्रद है।

मूल्य : 50 रुपये

बलदामृत

हृदय और उदर के रोगों में रामबाण है, इसके निरन्तर प्रयोग से फेफड़ों की निर्बलता दूर होकर पुनः बल आजाता है। पीनस (सदा रहनेवाला जुकाम और नजले) की औषधि है। वीर्यवर्धक, कासनाशक, राजयक्ष्मा, श्वास (दमा) के लिए लाभकारी है। रोग के कारण आई निर्बलता को दूर करता है तथा अत्यन्त रक्तवर्धक है।

मूल्य : 200 रुपये

आर्य आयुर्वेदिक रसायनशाला, गुरुकुल झज्जर

गुरुकुल झज्जर के प्रमुख प्रकाशन

१.	व्याकरणमहाभाष्यम् (५ जिल्द) (प्रदीप उद्योत, विमर्शसहित)	१५००.००
२.	अष्टाध्यायी (पाणिनि मुनि)	४०-००
३.	कारिकाप्रकाश (पं० सुदर्शनदेव)	२५-००
४.	लिङ्गानुशासनवृत्ति (पं० सुदर्शनदेव)	१५-००
५.	फिट्सूत्रप्रदीप (पं० सुदर्शनदेव)	१०-००
६.	अष्टाध्यायीप्रवचनम् (६ भाग) "	१२००.००
७.	काव्यालंकारसूत्राणि (आचार्य मेधाव्रत)	२५-००
८.	दयानन्द लहरी (मेधाव्रत आचार्य)	१५-००
९.	दयानन्ददिग्विजयम् (१-२ भाग) "	४५०.००
१०.	निरुक्त (हिन्दीभाष्य) (पं० चन्द्रमणि)	३५०.००
११.	योगार्यभाष्य (पं० आर्यमुनि)	४०.००
१२.	सांख्यार्यभाष्य (पं० आर्यमुनि)	८०-००
१३.	मीमांसार्यभाष्य (३ भाग)	२६०-००
१४.	महारानी सीता (स्वामी ओमानन्द)	१००-००
१५.	छान्दोग्योपनिषद्भाष्यम् (पं० शिवशंकर)	४००.००
१६.	ओरिजनल फिलासफी ऑफ योगा	२५०-००
१७.	वैदिक गीता (स्वामी आत्मानन्द)	६०-००
१८.	मनोविज्ञान तथा शिवसंकल्प "	३०-००
१९.	दयानन्दप्रकाश (स्वामी सत्यानन्द)	८०-००
२०.	धर्मनिर्णय (१-४ भाग)	१००.००
२१.	वैदिकविनय (१-३ भाग)	६०-००
२२.	देशभक्तों के बलिदान	२५०.००
२३.	सत्यार्थप्रकाश (स्वामी दयानन्द)	२००-००
२४.	संस्कारविधि (स्वामी दयानन्द)	५०-००
२५.	स्वाध्याय सन्दोह	२००.००
२६	सामवेद भाष्य (स्वामी ब्रह्ममुनि)	४००.००
२७.	स्वतन्त्रता संग्राम में आर्यसमाज का योग	१००.००
२८.	चारों वेद मूल	८८०-००
२९.	सामपदसंहिता	२५-००
३०.	सुखी जीवन (सत्यव्रत)	३०-००
३१.	महापुरुषों के संग में (सत्यव्रत)	१५-००
३२.	दैनंदिनी (सत्यव्रत)	३५-००
३३.	घर का वैद्य (वैद्य बलवन्तसिंह) १-५ भाग	१००-००
३४.	संस्कृतप्रबोध (आचार्य बलदेव)	२०-००
३५.	स्वामी ओमानन्द अभिनन्दन ग्रन्थ	२००.००
३६.	स्वामी ओमानन्द ग्रन्थमाला (४ जिल्दों में)	१०००.००
३७.	ब्रह्मचर्य के साधन (स्वामी ओमानन्द)	१००-००
३८.	प्राचीन भारत के मुद्रांक (भाग-१) "	६००-००
३९.	स्वामी ओमानन्द जीवन (वेदव्रत शास्त्री)	४००.००
४०.	रामायणार्यभाष्य (दो भाग)	५००.००
४१.	महाभारतार्यभाष्य (दो भाग)	६००.००
४२.	प्राचीन भारत में रामायण के मन्दिर	२००-००
४३.	नौरंगाबाद की मृन्मूर्तियां	२५०-००
४४.	अगरोहा की मृन्मूर्तियां	८००-००
४५.	प्राचीन ताम्रपत्र एवं शिलालेख	२००-००
४६.	प्राचीन भारत के मुद्रांक (भाग-२)	३००-००
४७.	छन्दःसूत्रम् (हिन्दी भाष्य सहित)	१२०-००
४८.	आर्य सत्संग पद्धति	१०-००

आर.एन.आई. द्वारा रजि. नं. 11757
पंजीकरण संख्या-P/RTK/85-B/2020-22

सुधारक लौटाने का पता :-
गुरुकुल झज्जर, जिला झज्जर (हरयाणा)-124103
E-mail : gurukuljhajjar@gmail.com

ग्राहक संख्या

श्री _____

स्थान _____

डा० _____

जिला _____

प्रकाशक आचार्य विजयपाल गुरुकुल झज्जर ने आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, दयानन्दमठ, गोहाना मार्ग, रोहतक में मुद्रक-डॉ० विक्रम सिंह शास्त्री के प्रबन्ध से छपवाया।